पाठ – बड़े भाई साहब

पाठ्य पुस्तक प्रश्न

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

उत्तर: कथानायक की रुचि पढ़ाई से अधिक खेलकूद, हरे-भरे मैदान में घूमने, दोस्तों से बातें करने और पतंगें उड़ाने में थीं।

प्रश्न 2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उत्तर: बड़े भाई छोटे भाई से हर समय पहला सवाल यही पूछते थे कि वह अब तक कहाँ था? आशय यही होता कि बाहर क्या कर रहा था, कमरे में बैठकर पढ़ क्यों नहीं रहा था। बड़े भाई को हमेशा यही चिंता लगी रहती थी कि कहीं छोटे भाई का ध्यान पढ़ाई से हट न जाए।

प्रश्न 3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर: दूसरी बार पास होने पर बड़े भाई के व्यवहार में यह परिवर्तन आया कि उसने पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देना कम करके पतंगबाज़ी पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

प्रश्न 4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई से पाँच साल बड़े थे और वे छोटे भाई से चार दर्जे आगे थे। अर्थात् वे नौवीं कक्षा में थे और छोटा भाई पाँचवीं कक्षा में।

प्रश्न 5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कॉपी पर या किताब के हासिये पर निरर्थक शब्द या वाक्य लिखते या कोई चित्र बनाया करते थे।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई की टाइम-टेबल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर: छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बनाते समय अनेक बातें सोचा-

- वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा।
- खेलकूद में समय बिलकुल भी बरबाद नहीं करेगा।

खेलकूद में गहरी रुचि होने के कारण वह टाइम-टेबल का पालन नहीं कर पाया।

प्रश्न 2. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर: एक दिन गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई जब बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा, तो उन्होंने उसे डाँटना शुरू कर दिया और बोले कि इस साल कक्षा में अव्वल आ गए, तो तुम्हारा दिमाग हो गया है। भाईजान! घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? उसे पढ़ाई का भय दिखाया। रावण का उदाहरण देकर कहा कि वह तो चक्रवर्ती राजा था मगर घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा दिया। इस प्रकार भाई साहब ने सफलता मिल जाने पर सहज बने रहने का उपदेश दिया।

प्रश्न 3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?
उत्तर: बड़े भाई साहब को अपनी इच्छाएँ इसलिए दबानी पड़ती थीं, क्योंकि बड़े होने के कारण उन पर छोटे ई की देख-रेख का जिम्मा था। यदि वे खुद बेराह चलते तो छोटे भाई को बेराह चलने से कैसे रोकते और उसे पढ़ाई के लिए कैसे प्रेरित करते।

प्रश्न 4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?
उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई को यह सलाह देते थे कि पढ़ाई करने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और अपना खून जलाना पड़ता है, मन की इच्छाओं को दबाना पड़ता है तथा कठोर मेहनत करनी पड़ती है, तब कहीं विद्या आती है। अपनी उपलब्धि पर कभी भी घमंड मत करो, क्योंकि घमंड तो प्रकांड पंडित चक्रवर्ती राजा रावण का भी नहीं रहा था। इतिहास पढ़ना, ज्योमेट्री तथा अंग्रेज़ी पढ़ना अत्यंत कठिन है आदि बातों की सलाह देकर बड़े भाई अपने छोटे भाई को नेक इंसान बनाना चाहते थे तथा उसका भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते थे।

प्रश्न 5. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया?
उत्तर: लेखक ने बड़े भाई के नरम व्यवहार का फ़ायदा उठाते हुए पढ़ाई पर ध्यान देना कम कर दिया। उसने मनमानी शुरू कर दी और उनसे छिपकर पतंगें उड़ाने लगा।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-
प्रश्न 1. बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।
उत्तर: मेरे विचार से यदि छोटे भाई को बड़े भाई की डाँट-फटकार ने मिलती तो वह पढ़ाई में इतना आगे जाकर कक्षा में अव्वल न आता। कहानी से अनुमान लगता है कि बड़े भाई की उम्र नौ साल रही होगी। यह उम्र अबोध होती है जिसमें बालक स्वविवेक से उचित निर्णय नहीं ले सकता है। उसे उचित दिशा-निर्देशन के साथ स्नेह मिश्रित रोष की भी जरूरत होती है। इनके अभाव में बालक के कदम गलत दिशा में मुड़कर उसे पढ़ाई-लिखाई से दूर ले जाते हैं।

प्रश्न 2. इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?
उत्तर: इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के बहुत-से तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है, किंतु मैं इससे पूर्ण रूप से सहमत नहीं हूँ। शिक्षा के जिन तौर-तरीकों के व्यंग्य से मैं सहमत हूँ, वे हैं जैसे विद्यार्थी का अध्ययनशील होना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है, पर हरदम पुस्तक खोलकर बैठे रहना; अर्थात् किताबी कीड़ा होना और खेल-कूद में रुचि न लेना आदि ठीक नहीं है, किताबी ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, पर इससे भी अधिक आवश्यक है, व्यावहारिक ज्ञान का होना।

प्रश्न 3. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?
उत्तर: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ पुस्तकें रटने या पुस्तकों का ज्ञान परीक्षा में ज्यों का त्यों उतार देने से नहीं आती है। वास्तव में जीवन की समझ व्यावहारिक अनुभव से आती है। जीवन की सुखद या दुखद घटनाओं से व्यक्ति नए-नए अनुभव प्राप्त कर जीवन को निकट से समझता है। ऐसे व्यक्ति ही समझदार होते हैं। वे जीवन-पथ पर आने वाले दुखों और परेशानियों का हल सहजता से खोज लेते हैं। वे दुख देखकर घबराए बिना विवेक से काम लेते हैं। लेखक के कम पढ़े-लिखे माता-पिता को जीवन के अनुभवों से समझ और ज्ञान प्राप्त हो चुका था।

प्रश्न 4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?
उत्तर: बड़े भाई साहब अक्सर अपने छोटे भाई को पढ़ाई में दिलचस्पी लेने के लिए कभी प्यार से समझाकर, तो कभी डाँटकर

समझाने का प्रयास करते रहते थे, लेकिन छोटा भाई खेल-कूद कर भी हर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता। इससे उसमें अभिमान-सा आ गया था। इस अभिमान को भाई साहब ने जिस युक्ति से दूर किया, उससे छोटे भाई के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई।

प्रश्न 5. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: लेखक के बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **पढ़ाकू-** लेखक का बड़ा भाई अत्यंत परिश्रमी और पढ़ाकू था। वह लगभग हर समय पुस्तकें खोले बैठा हुआ उनमें आँखें गड़ाए रहता था।
2. **पढ़ाई के प्रति समर्पित-** बड़े भाई साहब पढ़ाई के प्रति इतने समर्पित थे कि वे खेल-तमाशे, मेले तथा खेलकूद से पूरी तरह दूरी बनाकर रहते थे।
3. **कुशल उपदेशक-** बड़े भाई साहब कुशल उपदेशक थे। वे उपदेशों के माध्यम से ऐसे सूक्ति बाण चलाते थे कि पढ़ाई से विमुख छोटा भाई पढ़ने के लिए विवश हो जाता था। इसके लिए उन्हें तरह-तरह के उदाहरण भी याद थे।
4. **रट्टू शिक्षा प्रणाली के आलोचक-** बड़े भाई साहब रटने को बढ़ावा देने वाली शिक्षा प्रणाली के घोर विरोधी थे। वे चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो जीवन के प्रति समझ पैदा करें।
5. **कर्तव्यनिष्ठ-** बड़े भाई साहब उम्र में बड़े थे। बड़े होने के कारण उन्हें अपने कर्तव्य का पूरा ज्ञान था। वे इसे पूरा करने के लिए सदा प्रयासरत रहते थे।

प्रश्न 6. बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्त्वपूर्ण कहा है?

उत्तर: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से जिंदगी के अनुभव को महत्त्वपूर्ण कहा है, क्योंकि किताबें पढ़कर महज़ इम्तिहान पास कर लेना, डिग्रियाँ प्राप्त कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। असल बात यह है कि बुद्धि का विकास कितना हुआ तथा जीवन-मूल्यों के प्रति हम कितने जागरूक हुए। जीवन की सार्थकता, जीवन का उद्देश्य क्या है? इन्हें समझना परम आवश्यक है इसलिए हमारी जिंदगी का अनुभव जितना सुंदर, सहज तथा व्यावहारिक होगा उतना ही हमारे लिए महत्वपूर्ण होगा इसलिए बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव को महत्त्वपूर्ण कहा है।

प्रश्न 7. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

1. छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।
2. भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।
3. भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।
4. भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर:

1. फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नजर बचाकर कनकौए ("बड़ी पतंग" या "गुडडी") उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न। करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।
2. यह तुम्हारी गलती है। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और जिंदगी का तो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम०ए० और डी०फिल और डी०लिट् ही क्यों न हो जाओ।

3. संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े।
4. मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूं क्या, खुद बेराह चलें, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है, बुद्धि का विकास।

उत्तर: कक्षा में अव्वल आ जाने पर छोटे भाई के मन अभिमान आ जाता है। वह अपनी स्वच्छंदता का प्रदर्शन अपने आचरण में करने लगता है। यह देख बड़े भाई साहब ने उसके अभिमान का लक्ष्य करके कहा, कक्षा में प्रथम आकर यह न सोचो कि तुमने बहुत बड़ी सफलता पा ली है। इस सफलता से बड़ी चीज है बुद्धि का विकास और समझ तथा अनुभव। इस अनुभव में तुम अभी छोटे हो। इस मामले में मेरी बुद्धि का विकास तुमसे अधिक है।

प्रश्न 2. फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

उत्तर: इन पंक्तियों में लेखक कह रहा है कि जिस प्रकार आदमी मौत जैसे सत्य को सामने देखकर भी संसार के मोह-माया रूपी बंधनों में जकड़ा रहता है, आसक्ति में डूबा रहता है, सांसारिक सुख नश्वर हैं, यह जानते हुए भी आदमी संग्रह तथा भौतिक सुखों को भोगने में लगा रहता है, ठीक इसी प्रकार से लेखक भी भाई साहब की डाँट-फटकार खाकर भी खेलना-कूदना छोड़ नहीं सकता था। खेल-कूद से आसक्ति के कारण वह भाई साहब की तरह-तरह की डाँट-फटकार सह लेता था।

प्रश्न 3. बुनियाद ही पुख्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने?

उत्तर: किसी मकान को टिकाऊ और मजबूत बनाने के लिए उसकी नींव मजबूत बनानी पड़ती है। बिना मजबूत नींव के जिस तरह सुंदर मकान की कल्पना व्यर्थ है, उसी प्रकार शायद बड़े भाई साहब भी प्रत्येक कक्षा में दो-तीन साल लगाकर अपनी नींव मजबूत करते थे। वास्तव में यह भाई साहब की पढ़ाई पर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न 4. आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानों कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर: इन पंक्तियों में लेखक कह रहा है कि उसकी आँखें आसमान की ओर देख रही थीं तथा मन उस आकाश में उड़ने वाली पतंग में लीन था, जो कटकर धीमी चाल से झूमती हुई पतन की ओर जा रही थी अर्थात् नीचे गिर रही थी। उस समय आकाशगामी पतंग ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानों कोई आत्मा स्वर्ग से अलग होकर धरती पर नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो अर्थात् जन्म लेने जा रही हो। ठीक वैसा ही हाल लेखक का था।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

उत्तर:

पर्यायवाची शब्द:

	शब्द		**पर्यायवाची**
1.	नसीहत	–	सलाह, मशविरा
2.	रोष	–	क्रोध, गुस्सा

3. आजादी – स्वतंत्रता,स्वाधीनता
4. राजा – नृप,
5. महीप ताज्जुब – आश्चर्य, अचंभा

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

उत्तर:

मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग-

1. बड़े भाई साहब की फटकार की मेरे **सिर पर नंगी तलवार लटकी रहती है**।
2. मैं जब भी पतंग उड़ाकर आता, भाई साहब मुझे **आड़े हाथों लेते**।
3. बिना मेहनत के परीक्षा में पास होना तुम्हारे लिए ऐसा ही है जैसे **अंधे के हाथ बटेर लग** गई हो।
4. एवरेस्ट पर चढ़ना **लोहे के चने चबाना** है।
5. बड़े भाई साहब ने कहा, मेरी कक्षा में आ जाओगे तो तुम्हें **दाँतों पसीना आ** जाएगा।
6. छोटी कक्षा में **ऐरे-गैरे नत्थू खैरे** भी पास हो जाते हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशी, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए।

तत्सम	तद्भव	देशज	आगत (अंग्रेजी एवं उर्दू अरबी/फ़ारसी शब्द)
जन्मसिद्ध	आँख	दाल-भात	पोज़ीशन, फ़जीहत

तालीम, जल्दबाज़ी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हर्फ, सूक्तिबाण, जानलेवा, आँखफोड़, घुड़कियाँ, आधिपत्य, पन्ना, मेला-तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, फटकार, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, भाई साहब, अवहेलना, टाइम-टेबिल।

उत्तर:

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	आगत (अंग्रेजी एवं उर्दू अरबी/फारसी शब्द)
चेष्टा सूक्तिबाण आधिपत्य निपुण विद्वान प्रातःकाल अवहेलना पन्ना	आँखफोड़	घुड़कियाँ जानलेवा फटकार भाई साहब मेला-तमाशा	तामील, जल्दबाजी, पुख्ता, हाशिया, जमात, हर्फ़, मसलन, स्पेशल, स्कीम, टाइम-टेबिल

प्रश्न 4. क्रियाएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं-सकर्मक और अकर्मक।

सकर्मक क्रिया – वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं;

जैसे- शीला ने सेब खाया।
मोहन पानी पी रहा है।

अकर्मक क्रिया – वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं;

जैसे- शीला हँसती है।

बच्चा रो रहा है।

नीचे दिए वाक्य में कौन-सी क्रिया है-सकर्मक या अकर्मक? लिखिए-

1. उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया। **सकर्मक**
2. फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा। **अकर्मक**
3. शैतान का हाल भी पढ़ा होगा। **सकर्मक**
4. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। **सकर्मक**
5. समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो। **सकर्मक**
6. मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था। **अकर्मक**

प्रश्न 5. "इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए विचार, इतिहास, संसार, दिन, नीति, प्रयोग, अधिकार।

उत्तर: वैचारिक, ऐतिहासिक, सांसारिक, दैनिक, नैतिक, प्रायोगिक, आधिकारिक।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. प्रेमचंद की कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित हैं। इनमें से कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए। कुछ कहानियों का मंचन भी कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें ।

प्रेमचंद की कहानियाँ उनके आठ खंडों वाले प्रसिद्ध संग्रह **"मानसरोवर"** में संकलित हैं। इन कहानियों में भारतीय ग्रामीण जीवन, समाज की सच्चाइयाँ, नारी स्थिति, शोषण, संवेदना और नैतिकता का चित्रण बेहद सशक्त रूप में किया गया है।

यहाँ पर **"मानसरोवर"** संग्रह से कुछ **प्रमुख और मंचन योग्य कहानियों** के नाम दिए जा रहे हैं:

प्रेमचंद की प्रमुख कहानियाँ (मानसरोवर से):

मानसरोवर भाग 1 से:

1. **पंच परमेश्वर** – न्याय और दोस्ती के बीच संघर्ष
2. **बड़े घर की बेटी** – विवाह और स्त्री की प्रतिष्ठा
3. **कफन** – गरीबी, शोषण और संवेदनहीनता की कथा

मानसरोवर भाग 2 से:

4. **नमक का दारोगा** – ईमानदारी बनाम रिश्वतखोरी
5. **ठाकुर का कुआँ** – दलितों की व्यथा और सामाजिक भेदभाव
6. **पूस की रात** – किसान की दयनीय स्थिति और तटस्थता

मानसरोवर भाग 3–5 से:

7. **बेटों वाली विधवा** – माँ की करुणा और सामाजिक पीड़ा
8. **प्रेम की होली** – विवाह की सामाजिक रीतियों पर व्यंग्य
9. **मंत्र** – विश्वास और अंधविश्वास का अंतर
10. **ईदगाह** – बाल-मन की करुणा और संवेदनशीलता (बहुत लोकप्रिय)

मानसरोवर भाग 6–8 से:

11. **सद्गति** – दलित जीवन और धार्मिक पाखंड
12. **नैराश्य लीला** – आत्मसंघर्ष और नैतिक द्वंद्व

13. **दूध का दाम** – त्याग और सेवा भाव
14. **तावान** – समाज में न्याय की तलाश
15. **घासवाली** – मेहनतकश नारी की करुण कथा

मंचन हेतु उपयुक्त कहानियाँ:

- **पंच परमेश्वर** – 5–6 पात्रों के साथ
- **ईदगाह** – बाल पात्रों के लिए आदर्श
- **ठाकुर का कुआँ** – समाज सुधार विषय पर नाट्य प्रस्तुति
- **कफन** – सामाजिक आलोचना के लिए सशक्त
- **नमक का दारोगा** – हास्य-व्यंग्य और नैतिक संदेश

प्रश्न 2. शिक्षा रटंत विद्या नहीं है-इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

परिचर्चा विषय: ***शिक्षा रटंत विद्या नहीं है***

पात्र:

1. संचालक
2. छात्रा आर्या (रचनात्मक शिक्षा की समर्थक)
3. छात्र रजत (रटंत विद्या पर निर्भर)
4. छात्रा दीपाली (समझ आधारित शिक्षा की पक्षधर)
5. छात्र अर्जुन (तकनीकी शिक्षा की वकालत करता है)
6. छात्रा मेघा (समापन वक्ता)

परिचर्चा प्रारंभ

संचालक: नमस्कार साथियो! आज की हमारी परिचर्चा का विषय है — *"शिक्षा रटंत विद्या नहीं है।"* क्या केवल याद करके परीक्षा पास करना ही शिक्षा है? आइए, इस पर चर्चा करते हैं। सबसे पहले आमंत्रित करते हैं आर्या को।

आर्या: धन्यवाद! मेरा मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षाओं में अच्छे अंक लाना नहीं, बल्कि *समझदारी, नैतिकता और जीवन कौशल* विकसित करना है। जब हम सिर्फ रटते हैं, तो भूल भी जल्दी जाते हैं। लेकिन जब हम *समझ कर सीखते हैं,* तो वह ज्ञान हमेशा के लिए हमारा हो जाता है।

संचालक: बहुत अच्छा! अब रजत अपनी बात रखें।

रजत: मैं थोड़ा अलग सोचता हूँ। आज के समय में प्रतियोगिता इतनी बढ़ गई है कि बिना रटे सफलता मिलना कठिन है। बोर्ड परीक्षाएँ, प्रतियोगी परीक्षाएँ — सभी में समय कम होता है, इसीलिए रटना ज़रूरी हो जाता है।

दीपाली: रजत, तुम्हारी बात सही है, लेकिन क्या तुम जानते हो कि कई सफल वैज्ञानिक और आविष्कारक कभी रटने में अच्छे नहीं थे? *असली शिक्षा* वो होती है जो *सोचने की क्षमता, समस्या-समाधान,* और *रचनात्मकता* को बढ़ाए।

अर्जुन: मैं जोड़ना चाहूँगा कि आजकल तकनीकी शिक्षा का युग है — प्रैक्टिकल ज्ञान ज़रूरी है। सिर्फ किताबें रटने से न तो इंजीनियर बना जा सकता है और न ही डॉक्टर। *हमें प्रयोगों और अनुभवों से सीखना होगा।*

संचालक: बहुत सही! अब अंतिम वक्ता के रूप में मेघा अपनी बात रखें।

मेघा: शिक्षा को यदि हम केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम समझते हैं तो यह उसकी *अवमानना* है। *रटंत विद्या से तात्कालिक लाभ मिल सकता है, पर दीर्घकालिक समझ नहीं।* हमें शिक्षकों और पाठ्यक्रम दोनों को समझ-केंद्रित बनाना चाहिए।

समापन:
संचालक: धन्यवाद सभी वक्ताओं का। इस परिचर्चा से स्पष्ट है कि *सच्ची शिक्षा वह है जो सोच, समझ और व्यवहार में दिखाई दे।* आइए, रटंत विद्या से आगे बढ़कर *सार्थक, समृद्ध और मूल्याधारित शिक्षा* की ओर कदम बढ़ाएँ।

प्रश्न 3. क्या पढ़ाई और खेल-कूद साथ-साथ चल सकते हैं-कक्षा में इस पर वाद-विवाद कार्यक्रम आयोजित कीजिए।
उत्तर:
छात्र स्वयं करें ।

प्रश्न 4.
क्या परीक्षा पास कर लेना ही योग्यता का आधार है? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
उत्तर:
छात्र स्वयं करें ।
वाद-विवाद कार्यक्रम विषय:
"क्या पढ़ाई और खेल-कूद साथ-साथ चल सकते हैं?"
पात्र:

1. **संचालक**
2. **पक्ष में बोलने वाले छात्र (1 और 2)**
3. **विपक्ष में बोलने वाले छात्र (1 और 2)**
4. **न्यायाधीश / निष्कर्ष प्रस्तुतकर्ता (शिक्षक या छात्र)**

कार्यक्रम की स्क्रिप्ट
संचालक:
सुप्रभात सभी को! आज हमारे विद्यालय में *"क्या पढ़ाई और खेल-कूद साथ-साथ चल सकते हैं?"* इस विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। सबसे पहले हम *पक्ष में* बोलने वाले पहले वक्ता को आमंत्रित करते हैं।

पक्ष में (बोलने वाला 1):
छात्रा आर्या:
मैं पक्ष में बोलते हुए कहना चाहूँगी कि पढ़ाई और खेल-कूद दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। *स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।* अगर हम केवल पढ़ाई करेंगे और शारीरिक गतिविधियाँ नहीं करेंगे तो मानसिक थकावट हमें घेर लेगी। खेल हमें अनुशासन, टीमवर्क और आत्मविश्वास सिखाते हैं।

पक्ष में (बोलने वाला 2):

छात्र अर्जुन:

क्रिकेटर राहुल द्रविड़, बैडमिंटन स्टार पी.वी. सिंधु — ये सभी अच्छे छात्र भी थे। उनके जीवन से हमें सीखना चाहिए कि *खेल और पढ़ाई एक साथ की जा सकती है,* बस समय प्रबंधन होना चाहिए।

विपक्ष में (बोलने वाली 1):

छात्रा दीपाली:

मैं विपक्ष में कहना चाहती हूँ कि पढ़ाई का दबाव बहुत अधिक है — बोर्ड परीक्षाएँ, कोचिंग, असाइनमेंट्स — ऐसे में खेल-कूद समय की बर्बादी लगती है। अगर छात्र खेल में ज्यादा समय देंगे, तो पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं।

विपक्ष में (बोलने वाला 2):

छात्र रजत:

बहुत से खेलकर विद्यार्थी चोटिल हो जाते हैं, जिससे पढ़ाई प्रभावित होती है। खेल में एक या दो ही सफल होते हैं, लेकिन पढ़ाई से करियर के ज्यादा अवसर मिलते हैं।

न्यायाधीश / समापन वक्तव्य:

शिक्षक या छात्र:

दोनों पक्षों ने अपने तर्कों के साथ विषय को स्पष्ट किया। परंतु आज की शिक्षा नीति भी कहती है कि *समग्र विकास के लिए खेल-कूद जरूरी हैं।* संतुलन बनाना ही कुशल विद्यार्थी की पहचान है। अतः निष्कर्ष यही निकलता है कि **पढ़ाई और खेल-कूद दोनों साथ-साथ चल सकते हैं**, बशर्ते हम *अनुशासन और समय-प्रबंधन* को अपनाएँ।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. कहानी में ज़िंदगी से प्राप्त अनुभवों को किताबी ज्ञान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण बताया गया है। अपने माता-पिता बड़े भाई-बहनों या अन्य बुजुर्ग/बड़े सदस्यों से उनके जीवन के बारे में बातचीत कीजिए और पता लगाइए कि बेहतर ढंग से जिंदगी जीने के लिए क्या काम आया-समझदारी/पुराने अनुभव या किताबी पढ़ाई?

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

शीर्षक:

अनुभव बनाम किताबी ज्ञान – मेरे परिवार के अनुभवों के आधार पर विचार

मैंने जिनसे बातचीत की:

- **मेरे पिताजी** (नाम: श्री राकेश शर्मा)
- **मेरी दादीजी** (नाम: श्रीमती शकुंतला देवी)
- **मेरे बड़े भाई** (नाम: अमित शर्मा)

बातचीत का सारांश:

पिताजी का अनुभव:

पिताजी ने बताया कि उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, लेकिन जब वे पहली नौकरी पर गए तो उन्हें लोगों के साथ व्यवहार करना, कठिन परिस्थितियों में शांत रहना और टीमवर्क जैसे गुण बहुत काम आए — जो उन्होंने किताबों से नहीं, जीवन के अनुभवों से सीखे।

उद्धरण:
"डिग्री ने नौकरी दिलाई, पर समझदारी ने मुझे उसमें टिकाया।"

दादीजी का अनुभव:
दादीजी ने स्कूली शिक्षा तो बहुत कम पाई, पर जीवन के हर मोड़ पर उन्होंने धैर्य, संयम और रिश्तों को संभालने की कला से काम लिया। उन्होंने हमें बताया कि जीवन में कठिन समय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता ज्यादा मदद करती है।
उद्धरण:
"किताबें सही-गलत सिखाती हैं, पर अनुभव तुम्हें सही समय पर सही निर्णय करना सिखाते हैं।"

बड़े भाई का अनुभव:
भैया ने कहा कि किताबी ज्ञान ने उन्हें परीक्षा में टॉप कराया, लेकिन असल जीवन में नौकरी ढूँढ़ने, इंटरव्यू में बोलने और लोगों से जुड़ने में आत्मविश्वास और अनुभव ने सहायता की।

निष्कर्ष:
बातचीत के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि —
किताबी ज्ञान जरूरी है, लेकिन **जीवन को समझदारी और अनुभव के बिना बेहतर ढंग से नहीं जिया जा सकता।** अनुभव सिखाते हैं कि **कब, कहाँ और कैसे ज्ञान का प्रयोग करना है।**

प्रश्न 2. आपकी छोटी बहिन/छोटा भाई छात्रावास में रहती रहता है। उसकी पढ़ाई-लिखाई के संबंध में उसे एक पत्र लिखिए।
उत्तर:
दिनांक-15/02/2025
बी-3/4, राणाप्रताप बाग,
दिल्ली
प्रिय
प्रतिभा,
हार्दिक स्नेह,
प्रतिभा! तुम घर से दूर पढ़ने के लिए गई हुई हो! तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ निकट हैं। आज का युग प्रतियोगिता का युग है, इसमें परीक्षा उत्तीर्ण करना ही पर्याप्त नहीं, अपितु अच्छे अंक लाना अनिवार्य है। कक्षा में अच्छे अंकों के साथ प्रथम आना आसान नहीं, इसके लिए कठोर व नियमित अध्ययन नितांत आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी संगति अच्छे छात्रों से होगी। तुम इधर-उधर की बातों से दूर रहकर अध्ययन को अपना आधार बनाओगे। परिश्रम ही सफलता कुंजी है। मुझे विश्वास है कि तुम समय का सदुपयोग कर मेहनत के बल से अच्छे अंक लेकर दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण होंगी। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगी।
तुम्हारा
बड़ा भाई
क०ख०ग०